प्रकाशनार्थ

पटना, 12 फरवरी। 'बिहार पर विशेष फोकस के साथ भारत में प्राइवेट चिकित्सीय देखरेख और सार्वजनिक निजी साझीदारी (पीपीपी) : अवसरों और चुनौतियों की तलाश' विषय पर एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा 11-12 फरवरी, 2021 को पटना में एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

बिहार में सार्वजनिक निजी साझीदारी के अवसरों और चुनौतियों पर बिहार के स्वास्थ्य अधिकारियों के साथ चर्चा करने के लिए भारत और विदेश के शिक्षाविद, चिकित्सक, और सार्वजनिक स्वास्थ्यकर्मी बेबिनार में एक साथ आए। वेबिनार का आयोजन दो दिनों तक किया गया और इसमें यूनाइटेड किंगडम, फिनलैंड और भारत के शोधकर्ताओं ने भाग लिया। विद्वानों ने भारत और विदेशों में ऐतिहासिक रूप से निजी क्षेत्र की भूमिका और वर्तमान स्थिति पर चर्चा की। साथ ही, नैतिक चुनौतियों, स्वास्थ्य सेवाओं के लिए बाजार के तर्क, और संविदाओं के साथ समस्या तथा सार्वजनिक निजी साझीदारी में कमियों पर भी चर्चा हुई। प्रख्यात चिकित्सक डॉ. नरेश त्रेहान ने सार्वजनिक क्षेत्र के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण देखरेख उपलब्ध कराने में निजी क्षेत्र की भूमिका को प्रमुखता से सामने रखा। हालांकि उन्होंने जोर देकर कहा कि निजी क्षेत्र को चाहिए कि वह चिकित्सीय नैतिकताओं और मुनाफा की मानसिकताओं से संबंधित डरों को दूर करे।

बिहार सरकार के प्रधान स्वास्थ्य सचिव श्री प्रत्यय अमृत ने सार्वजनिक निजी साझीदारी के सुचारू और पारदर्शी कामकाज में बिहार सरकार द्वारा निभाई जा रही भूमिका पर प्रकाश डाला। वहीं, बिहार में सार्वजनिक निजी साझेदारी स्थापित करने के दौरान उद्यमियों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है उन पर मेदांता, पटना के डॉ. रविशंकर प्रसाद ने चर्चा की। पूरे भारत के अनुभवों के आधार पर बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन (बीएमजीएफ) की डॉ. देबाश्री भट्टाचार्य ने विभिन्न राज्यों में स्वास्थ्य में सार्वजनिक निजी साझेदारी की उपलब्धियों और सीमाओं को सामने रखा।

आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी. घोष के आरंभिक वक्तव्य के बाद वेबिनार के दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए जिनकी अध्यक्षता ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. रॉबर्ट आनॉट और आद्री की डॉ. अस्मिता गुप्ता ने की। अंत में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की डॉ. कस्तूरी सेन ने हुई बातचीत का सारांश प्रस्तुत किया और धन्यवाद ज्ञापन किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)